पैदल इंडिया

देवेन्द्र आर्य

पैदल इंडिया

देवेन्द्र आर्य

आईएसबीएन : 9788195247554

© **देवेन्द्र आर्य**

प्रथम संस्करण 2021

मूल्य : 120 रुपये

अगोरा प्रकाशन
ग्राम - अहिरान, पोस्ट - चमाँव, शिवपुर
जिला - वाराणसी 221 003 (उत्तर प्रदेश)
मो. : 09479060031

आवरण सज्जा : अमन विश्वकर्मा

Email **:** agoraprakashan001@gmail.com
Website : https://www.agoraprakashan.com

अगोरा प्रकाशन के लिए अपर्णा द्वारा, कल्पना प्रेस, रामकटोरा, वाराणसी से मुद्रित।

Paidal India

Poems By : Devendra Arya

पैदल इंडिया

समर्पण

पिता के पहले लिखता ही हूँ
कहो तो माँ के पहले भी
लिख दूँ

बहन के पहले लिखते
भांजे का चेहरा काँप जाएगा आँखों में
फिर भी

ज़िंदगी के लिए अगर जरूरी ही हुआ
तो भाई के पहले भी
लिख दूँगा

और वो पड़ोसी मेरा!

जब कोई न था तब वो था
पर जान पर आन पड़ेगी
तो मन मार कर उसके पहले भी लिख ही दूँगा

गला दबा कर ही लिखवाना है
तो पत्नी के पहले भी लिखवा लो
पर माफ करना
पुत्र के पहले स्वर्गीय न लिख पाऊँगा

हे यम!
तुम भले अगर चाहना
तो पिता-पुत्र दोनों के आगे लिख लेना
स्वर्गीय

6 जून, 2021

अनुक्रम

1.	डर के ख़िलाफ़ डटी रही कलम	9
2.	आइना आइने से कहता है	13
3.	अफ़वाह	14
4.	हक़ में नहीं किसान के क़ानूनी हाशिए	17
5.	मैं सुरक्षित	18
6.	मुफ़लिसी लफ़्जों की ख़ुदकुशी अर्थ की	19
7.	अगर बाबा साहब होते	20
8.	क़ुर्बानी	21
9.	चाय सिर्फ़ चाय ही नहीं होती	26
10.	दिल्ली	29
11.	खेतों से होके जा रही राजा की सवारी	36
12.	धूप से इमदाद मत लो सायबानो	37
13.	सुना है	38
14.	युगल	39
15.	मरना है तो खा कर मर	41
16.	हिन्दी पोयम	42
17.	दिल धड़कता था जिनके आने से	44
18.	संसद में आवाज़ें सील	45
19.	काजल और कालिख	46
20.	का हो भइया पूरनमासी	47
21.	बैजनाथ सच सच बतलाना	49
22.	अब त चलि जइतू ए दादा!	52
23.	पैदल इंडिया	54
24.	कैसी सूरत बनाए बैठे हैं	61
25.	लॉकडाउन संयमीं	62
26.	सनातन ज्ञान	64

27.	कवि कविता और भाषा	66
28.	छह फिट की दूरी से लिखना कवि	67
29.	कविता	70
30.	ठहाके जिस तरह से आँसुओं के साथ रहते हैं	72
31.	डर	73
32.	कठकरेजी	76
33.	प्रार्थना 2020	79
34.	खेत खेत तैयारी है	81
35.	औरतें हैं या आज़ादी की तख़्तियाँ	82
36.	धूप सीधी सरल सी रेखा है	84
37.	दर्द 2021	86
38.	दिल्ली में हो रही मुनादी	87
39.	तुम चुनाव तो जीत गए हो लेकिन दिल?	88
40.	जोड़े में एक	89
41.	गृहणी जैसा हो आया मन	90
42.	एक कम एक सौ तीस करोड़	91
43.	जिसका वुजूद ही नहीं चर्चा उसी पे है	93
44.	कवि हारा या कविता हारी	94
45.	शस्य श्यामला देश में तंगी	96
46.	आख़िर क्यों?	97
47.	रक्षाबंधन ऑनलाइन	99
48.	केसर डल कालीन दलाल	100
49.	दंगे क़ब्रिस्तान में नहीं होते	101
50.	फूले फूले चुन लिए	103
51.	चौकीदार कमाल हुइ गवा	105
52.	किसान मुक्त भारत	106
53.	ज़मीन पक रही है	108
54.	लगाव	109
55.	हाँ साहब!	110
56.	पास पास रख दिया जो होगा देखेंगे	112

डर के ख़िलाफ़ डटी रही कलम

आप कविता के लिए महत्त्वपूर्ण हो सकते हैं पर जनता के लिए? ज़रूरी कविता होने और ज़रूरत के कवि होने में आप किसे तरजीह देते हैं, कवि महोदय? जहाँ तक मेरा सवाल है, कविता मेरे लिए क़ाबिलीयत छाँटने का हथियार कभी नहीं रही। दिल में पोसता हूँ कविताएँ, प्यार की तरह उन्हें कंधों पर गृहस्थी की तरह ढोता भी हूँ। कविता मेरी मुँह बोलुआ है, मेरा अनुराग, मेरी हमराज़, मेरी हमसफ़र और मेरा हौसला भी। कविता के सहारे मैं विपरीत समय से टकराता रहा हूँ, उबरता रहा हूँ। एक सुख मिलता है कविता लिखने में। चाहता हूँ वही हौसला, वही सुख इन कविताओं को पढ़कर आपको भी मिले।

खेती-किसानी से न जुड़े होने के बाद भी हमारा अटूट रिश्ता किसान से है क्योंकि हमारा रिश्ता रोटी से है। कविता का यही रिश्ता किसानी और अन्ततः रोटी से है। ये कविताएँ मेरे भीतर के संशय, निराशा और अंधकार को दूर करती रही हैं। चाहता हूँ इन्हें पढ़ कर आपकी भी यही प्रतीति हो। इन्हीं अर्थों में मेरा स्वांतः सुखाय, जनवाद के करीब होता है। मैं अपनी कविताओं में प्रतिरोध का सुख रचता हूँ। इन्हीं अर्थों में प्रतिरोध उजाड़ने वाली सत्ता से टकराना मेरी कविता की आदत है, उसका नैतिक दायित्व भी। यह भौतिक कम एक मानसिक तैयारी भरा सुख है। मेरी कविताएँ प्रतिरोध की प्यारी ज़बान हैं जिन्हें बेज़बानी कतई पसंद नहीं, तथाकथित रणनीति के नाम पर भी नहीं, सुरक्षा के नाम पर भी नहीं।

मुख्य धारा में लाश की तरह बहने का प्रतीक नहीं हो सकती कविता। कविता मेरे लिए प्यार का सलीक़ा भी है और धरने पर बैठने की जिजीविषा भी। जीवन की तमीज़ के लिए मैं भाषा की तमीज़ छोड़ देने को भी ग़लत नहीं मानता, कविता में तो कतई नहीं। इन्हीं अर्थों में मैं देश का होकर भी देश निकालों का बिरादर हूँ। मैं उनके साथ खड़ा हूँ जो अपने देश और देशवासियों से बेपनाह मोहब्बत करते हैं और उनके खिलाफ़ कुछ भी गलत होता देख आंदोलित हो जाते हैं।

कविता ही देख पाती है कि अत्याचारी आँसू पोंछ रहे हैं। कविता ही सतर्क कर पाती है कि लोक की चिड़िया और तंत्र का बाज एक ही डाल पर बैठे हैं। कविता

इन्हीं अर्थो में ह्विसिल ब्लोवर होती है। मेरे लिए कविता विचार का अनुभव ही नहीं, जीवन का अनुभव भी है जो बाज़ औक़ात विचार अनुभव के ख़िलाफ़ भी पड़ता है। इन्हीं अर्थों में मेरा कविता अनुभव ग़ैर राजनीतिक भी है। इन कविताओं में आपको कविता, कविता कम एक्टिविज़्म अधिक नज़र आ सकती है। आप चाहें तो इसे आरोप की तरह दुहरा भी सकते हैं पर मेरे लिए कवि का एक्टिविस्ट होना उसकी जन-प्रामाणिकता के लिए आवश्यक है। यही मेरी कविता-यात्रा रही है जो अधूरी है, इसीलिए जीवित है। इस किताब में संग्रहित पहली कविता 2 जनवरी 2020 और अंतिम कविता 29 जनवरी 2021 की लिखी है। पिछले एक साल में भिन्न शिल्पों में लिखी कविताओं में से कुल छप्पन (56) कविताएँ यहाँ संकलित हैं।

पिछला साल कई कारणों से अत्यंत चर्चित (विवादित) और महत्त्वपूर्ण (त्रासद) रहा है। छात्रों, नागरिकों के साथ बर्बर अत्याचार, नागरिकता क़ानून विरोधी आंदोलन, दिल्ली दंगा, करोना जनित देश बंदी, दुर्व्यवस्था जनित मजदूर उत्पीड़न, तब्लीगी जमाअत के बहाने साम्प्रदायिक ध्रुवीकरण और महीनों से चल रहा किसान आंदोलन। स्वतंत्र भारत के इतिहास में शायद सबसे अधिक घटना प्रधान वर्ष 2020 ही रहा है, एक दुःस्वप्न की तरह। इस एक वर्ष ने बहुत कुछ छीना है। लूटा है। तोड़ा है। इस एक साल में असहमति विकास विरोध से बढ़कर देशद्रोह बना दी गई। कानून सम्मत तानाशाही की धमक सुनाई पड़ने लगी। अकेला शब्द-कर्म ही था जिसने हम सब को इस दुःस्वप्न से उबरने में मदद की। यही इस संग्रह का रचनाकाल है और अधिकांश कविताओं की मूल चिंता भी यही है। जब सारे रास्ते बंद नज़र आ रहे थे, कविता ने हौसला दिया, रास्ता खोजने की हिम्मत दी। कभी एक गीत लिखा था- 'बंद हैं तो और भी खोजेंगे हम, रास्ते हैं कम नहीं तादाद में।' हमने रास्ते तलाशे भी। खुद ही नहीं, कविता को भी बचाए रखा।

इन कविताओं को लेकर अग्रज कथाकार भाई मदनमोहन और शायर मित्र सरवत जमाल से हुई चर्चाएँ महत्त्वपूर्ण रही हैं। एतदर्थ उनका धन्यवाद। अपनी तरह की अकेली और महत्त्वपूर्ण पत्रिका 'गाँव के लोग' के सम्पादक, चर्चित कथाकार भाई रामजी यादव और अपर्णाजी के 'अगोरा' प्रकाशन का मैं सचमुच आभारी हूँ जिन्होंने बिना अगोरे मुझसे पांडुलिपि तैयार करवाई और बिना अगोरवाए पुस्तक सुरुचिपूर्ण ढंग से प्रकाशित कर दी। उनकी लगनशीलता और तत्परता स्तुत्य है। अंत में धन्यवाद देश के उदीयमान और अपने काम के लिए चर्चित हो रहे छविकार आदित्य भूषण का जिनके कैमरे में क़ैद मैं, चौथे कवर पर मौजूद हूँ।

संग्रह के साथ आप क्या सलूक करेंगे, आप जानें। इतना जरूर है कि आपकी